>

Title: Need to raise an army regiment of tribal youth after the name of Birsa Munda.

श्री मारोतराव सैनुजी कोवासे (गडचिरोली-चिमूर): देश की आजादी के छह दशकों उपरांत भी जनजातीय क्षेत्रों में पक्की सड़क, क्षेत्रीय रेल मार्गों का नेटवर्क, उच्च शिक्षा के केन्द्र और रोजगार की व्यवस्था नहीं है। आदिवासी अपनी जातीय भाषा और संस्कृति को बरकरार रखना चाहते हैं। लेकिन यातायात के साधानों का अभाव होने के कारण आदिवासी आपस में पारंपरिक और सांस्कृतिक संपर्क करने से वंचित रहते हैं और आसानी से आपस में भेंट-मुलाकात नहीं कर पाते। वहां रोजगार न होने के कारण उनके पास विस्थापन के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा है। इन क्षेत्रों में ज्यादातर कंपनियों में उच्च पदों पर बाहर के लोग ही विराजमान हैं। इसी प्रकार उद्योगों व खनिज पदार्थों से पूरे देश को लाभ हो रहा है। लेकिन इन क्षेत्रों के निवासियों को उतना लाभ नहीं मिल रहा है जितना कि मिलना चाहिए।

देश के विभिन्न राज्यों में जनजातियों की जनसंख्या बहुत अधिक है। रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत अनेक रेजिमेंट हैं, लेकिन जनजातियों के लिए अलग से रेजिमेंट नहीं है। जनजातीय युवकों को नक्सली गुटों में प्रवेश करने से रोकने के लिए रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत एक नए रेजिमेंट ""बिरसा मुंडा रेजिमेंट"" का गठन किया जाना चाहिए। इससे आदिवासी नवयुवकों को न केवल रोजगार मिलेगा, बल्कि उनमें आत्म गौरव का भी बोध होगा तथा वे अपने सकारात्मक मार्ग से नहीं भटकेंगे।

अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि वह नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए जनजातीय लोगों के लिए विकास के विकल्प और सम्मानजनक जीवन प्रदान करने हेतु आवश्यक कदम उठाए।